UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654

नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक वर्ष : 10, अंक : 1, जून 2022

मूर्त व अमूर्त प्रदर्शन कलाओं के संरक्षण में कोमल कोठारी का योगदान

डॉ. यादविंद्र सिंह

सहायक प्रोफेसर संगीत वादन, राजकीय महिला महाविद्यालय, सिरसा

Paper received on : December 21, May 02, May 15, Accepted on May 31, 2022

सार-संक्षेप

कोमल कोठारी भारत में प्रदर्शनकारी कलाओं के संरक्षण व परलेखन के प्रमुख प्रेणताओं में से थे। उन्होंने राजस्थान राज्य के संगीत वाद्यों, कठपुतलियों, आभूषणों, लोकनाट्यों, महाकाव्यों, लोक देवताओं, लोक गायकों आदि पर विस्तृत अनुसन्धान किया, तथा साथ ही प्रदर्शनकारी कलाओं के संरक्षण व उन्हें आमजन तक पहुँचाने में अनथक प्रयत्न किए। कोमल कोठारी ने अपने जीवन के अंतिम समय में प्रदर्शनकलाओं के संरक्षण के लिए जोधपुर में अरना-झरना संग्रहालय का भी निर्माण किया। कोमल कोठारी के बारे में अध्ययन करने का उदेश्य यह है कि उन द्वारा किये गए प्रदर्शनकलाओं के संरक्षण व उत्थान हेतु किए गए कार्यों को ज्यादा से ज्यादा जाना जा सके और मुख्यतः उनके द्वारा संगीत कला संरक्षण संबंधित योगदान को जानना भी इस शोध कार्य का प्रमुख उदेश्य है। इस शोधकार्य को लिखने के लिए प्राथमिक व माध्यमिक स्त्रोतों का सहारा लिया गया है।

मुख्य शब्द : कोमल कोठारी, राजस्थान, रूपायन संस्थान, कमायचा, सिंधी सारंगी

शोध-पत्र

कोमल कोठारी भारत में प्रदर्शनकारी-कलाओं के प्रलेखन के प्रमुख प्रेणताओं में से एक थे। कोमल कोठारी का जन्म 1929 ईस्वी को राजस्थान के कपासन गाँव में हुआ। इन्होंने कठपुतलियों, आभूषणों, लोकनाट्यों, महाकाव्यों, लोकदेवताओं, सांगीतिक वाद्ययंत्रों आदि पर गहन अध्ययन व अनुसन्धान किया। राजस्थानी लोक कलाओं पर किये गए अपने शोध कार्यों को कोमल कोठारी ने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं एवं पुस्तकों में हिंदी एवं अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित करवाया। राजस्थानी लोक संगीत और वाद्ययंत्रों से संबन्धित उनके ज्ञान व रुचि ने उन्हें इस क्षेत्र में प्रतिभाशाली बना दिया। कोमल कोठारी लोक संगीत और संगीतकारों के लिए कार्य करना चाहते थे, इसलिए इन्होंने राजस्थानी लोक संगीत से संबंधित प्रलेखन कार्य शुरू किया। कोमल कोठारी वह व्यक्ति भी थे, जिनकी वजह से राजस्थानी लोक सांगीतिक समुदायों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दर्शकों तक पहुँच उन्होंने राजस्थान के पारम्परिक लोक संगीत को हजारों घंटों की रिकॉर्डिंग्स के माध्यम से संरक्षित किया। उनके शोध की गहराई आने वाले सैंकडों साल की राजस्थानी लोक सांगीतिक धुनों को जीवित रखेंगी।

कोमल कोठारी ने कम से कम 400 प्रकार की सारंगियों को एकत्रित किया व सारंगियों से संबंधित सूचनाओं को लेखांकित किया। उन्होंने थार मरुस्थल में रहने वाले सेकंडों गुमनाम कलाकारों को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलवाई। वर्ष 1960 से उन्होंने जोधपुर, जैसलमेर तथा बाड़मेर आदि जिलों में गाँव-गाँव घूमकर लोक गायकों के गीत एवं संगीत को ध्वन्यांकित करना आरम्भ किया। कोमल कोठारी ने कई वर्षों तक लोक संगीत रिकॉर्ड किया उनके पास लोकगीतों की लगभग 20 हजार घंटों की रिकॉर्डिंग्स एकत्रित किया। कोमल कोठारी के पुत्र व वर्तमान में अरना-झरना संग्रहालय के देखरेख करने वाली संस्था रूपायन संस्थान के सेक्रेटरी कुलदीप कोठारी ने अपने साक्षात्कार में बताया, ''कोमल कोठारी ने अपनी मेहनत व लगन से राजस्थानी लोक कलाओं पर अनुसन्धान कार्य शुरू किया व अपने जीवन के अंतिम दिनों में एक मरुस्थल संग्रहालय का भी निर्माण कार्य शुरू किया किन्तु कैंसर से लड़ते हुए कोमल कोठारी का निधन 2004 में संग्रहालय स्थापित होने से पूर्व हो गया। राजस्थानी लोक संगीत की महत्ता, आवश्यकता और प्रासंगिकता को रेखांकित करना उनके जीवन का ध्येय था और वे इसमें पूरी तरह से सफल भी हुए। भारत सरकार ने उनके योगदान को पहचाना और उन्हें पद्म श्री (1963) तथा पद्म भूषण (2004) से सम्मानित किया। राजस्थानी लोक गीतों व कथाओं आदि के संकलन एवं शोध हेतु समर्पित कोमल कोठारी को राजस्थानी साहित्य में किए गए कार्य हेतु नेहरू फैलोशिप भी प्रदान की गई थी। इसके अतिरिक्त राजस्थान सरकार द्वारा इन्हें राजस्थान रत्न से भी सम्मानित किया गया। इसी वर्ष कोमल कोठारी को भारत सरकार द्वारा पद्मविभषण पुरस्कार दिया गया। यह पुरस्कार उनकी पत्नी ने भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. कलाम से ग्रहण किया।''[1]

चित्र संख्या 1

उपरोक्त चित्रों में कोमल कोठारी राजस्थान के विभिन्न लोक कलाकारों के साथ वार्तालाप कर रहें हैं। यह चित्र इंटरनेट से प्राप्त किये गए हैं।[2]

मूर्त एवं अमूर्त प्रदर्शनकलाओं के संरक्षण में कोमल कोठारी के योगदान को निम्न भागों में विभाजित किया जा सकता है–

1. राजस्थानी लोक संगीत के परिरक्षक

कोमल कोठारी ने 1960 ईस्वी से जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर व राजस्थान के अन्य जिलों में घूम-घूम कर लोक गायकों के गीत एवं संगीत को रिकॉर्ड करना शुरू किया। लोक गायकों व वादकों के संगीत की रिकॉर्डिंग्स करते हुए कोमल कोठारी को बहुत सी कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ा। कोमल कोठारी के इस संघर्ष के संबंध में 'डॉ. मोहन लाल गुप्ता' अपनी पुस्तक 'राजस्थान के प्रमुख संग्रहालय' में बताते है कि श्लंगाह एवं मांगणियार जाति के गायक टेप रिकॉर्डर को शुरू में संदेह की दृष्टि से देखते थे और उनकी रिकॉर्डिंग करने के लिए कोमल कोठारी ने उनको तरह-तरह के आश्वाशन देने शुरू किये। एक बार जब कोमल कोठारी अंतर खान मांगणियार की रिकॉर्डिंग करने की तैयारी कर रहे थे तो अंतर खान अवसर देखते ही तेजी से भाग गए। जब कोमल कोठारी ने बाद में अंतर खान से भागने का कारण पूछा तो अंतर खान ने बताया कि इस मशीन में उसकी आवाज कैद हो जाएगी और वह दोबारा नहीं गए पायेगा। लोक गायकों की रिकॉर्डिंग के शुरूआती दिनों में कोमल कोठारी गायकों को 4 आना प्रति रिकॉर्डिंग का दिया करते थे।'[3] उन्होंने निरंतर वर्षों तक लोक गायकों व वादकों को रिकॉर्ड किया। और इस प्रकार उनके पास लगभग 20 हजार घंटे की रिकॉर्डिंग इकठ्ठी हो गई। bharatdiscovery.org वेबसाइट पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार, ''लोक गायकों व वादकों की रिकॉर्डिंग्स के बाद कोमल कोठारी जी को लगा कि अगर प्रयत्न किया जाये तो इन गायकों व वादकों को विश्वभर में प्रसिद्धि दिलाई जा सकती है। यह कोमल कोठारी की मेहनत का ही नतीजा था कि 1963 में पहली बार मांगणियार कलाकारों का दल दिल्ली गया और वहाँ जाकर स्टेज पर अपनी सफल प्रस्तुति दे सका। कोमल कोठारी जीवन से लबालब भरे इस राजस्थानी लोक संगीत को इस सब से कहीं आगे ले जाना चाहते थे। 1967 में इन कलाकारों के साथ उनकी स्वीडन की यात्रा के बाद चीजें इस तेजी से बदलीं कि आज राजस्थान के लगातार विकसित होते पर्यटन की इस संगीत के बिना कल्पना भी नहीं की जा सकती।''[4]

अपने साक्षात्कार में कोमल कोठारी के सुपुत्र कुलदीप कोठारी ने बताया कि, श्रूपायन संस्थान की स्थापना के पश्चात कोमल कोठारी और विजयदान देथा की सोच भाषा के संकलन जैसे मौखिक किस्सा-कहानियों के संकलन में थी, किन्तु साथ ही उन्होंने राजस्थानी लोक गीतों का भी संकलन उन्होंने शुरू किया। लोक गीतों के संकलन में रुचि होने के साथ ही इनका ध्यान राजस्थानी लोक वाद्ययंत्रों की और भी आकर्षित हुआ। इस प्रकार उन्होंने अपने शोध की परिधि में लोक सांगीतिक वाद्यों को भी सम्मिलित किया व इस विषय पर गहराई से कार्य शुरू किया अपनी सांगीतिक रुचि के कारण इन्होंने लोक संगीत से जुड़ी जनजातियों के बारे में विस्तृत जानकारियाँ एकत्रित करनी शुरू की व धीरे-धीरे लोक कलाकारों के संरक्षण व उत्थान में भी रूपायन संस्थान ने अग्रणी भूमिका निभाते हुए लंगाह एवमं मांगणियार जातियों के कलाकारों को विश्व स्तर पर प्रसिद्धि दिलाई आज से तकरीबन 60 वर्ष पूर्व रूपायन संस्थान ने केवल मात्र लोक गीतों या

लोक वाद्यों से जुड़ी सामग्री का मात्र परलेखन ही नहीं किया अपितु उस समय के कलाकारों के गायन वादन को रिकॉर्ड करना शुरू किया। अगर 1960 में किसी 70 वर्षीय कलाकार की रिकॉर्डिंग की गई है तो उन रिकॉर्डिंग्स में उसके पिता, दादा व परदादा से सीखी हुई सांगीतिक विद्या भी शामिल है और इस प्रकार हम इन रिकॉर्डिंग्स की सहायता से पिछले 200 से 300 सालों की सांगीतिक परम्परा को जान सकते है व अध्ययन कर सकते हैं।[5]

2. लंगाह और मांगणियार जनजातियों के लिए के लिए योगदान

राजस्थान के लोक वाद्ययंत्रों में सिंधी सारंगी एवं कमायचा जैसे अद्भुत लोक वाद्य भी उपलब्ध है। जब इन्हे बजाने वाले कम होने लगे तो इन वाद्ययंत्रों के निर्माता भी लुप्त होने के कगार पर आ गये। मांगणियार जाति कमायचा छोड़कर हारमोनियम बजाने लगे। कोमल कोठारी इस विषय पर बेहद चिंतित हुए और उन्होंने कमायचा बनाने वाले वाद्ययंत्र निर्माताओं को ढूँढ़ा व सैकड़ों नए कमायचा वाद्ययन्त्रों को बनवाकर कम उम्र के मांगणियार कलाकारों को दान स्वरूप दिए व साथ ही इन सभी कलाकारों को कमायचा बजाने का प्रशिक्षण भी दिलवाया। इसी प्रकार ही लंगाह जाति के मुख्य वाद्ययंत्र सिंधी सारंगी को बनाने वाले वाद्ययंत्र निर्माता तो बिलकुल लुप्त ही हो चुके थे। 1980 के दशक में कोमल कोठारी को सिंधी सारंगी वाद्यों को बनाने वाले को एक कारीगर के बारे में जानकारी मिली तो उन्होंने उस कारीगर से सिंधी सारंगियां बनवाकर लंगाह जाति के कलाकारों में बंटवाई व बजाने के लिए प्रशिक्षण भी दिलवाया। इस प्रकार अपने अनथक प्रयासों से कोमल कोठारी ने मांगणियार व लंगाह जातिओं के उत्थान के लिए कार्य किए। और उनके द्वारा राजस्थानी लोक कलाकारों के लिए कार्यों को उनके सुपुत्र आगे बढ़ा रहें हैं। अपने साक्षातकार में उनके सुपुत्र कुलदीप कोठारी ने बताया कि, श्जब भी कभी उन्हें यह जानकारी होती है कि किसी कलाकार के पास वाद्ययंत्र नहीं है या खराब अवस्था में है तो वे कलाकारों को नए वाद्ययंत्र या वाद्ययंत्र को ठीक करवाकर कलाकारों को उपलब्ध करवाते हैं।'' रूपायन संस्थान के द्वारा अब एक लंगाह जाति के बच्चों के लिए एक स्कूल चलाया जाता है यहाँ हर सप्ताह में तीन दिन संगीत की शिक्षा दी जाती है व इस शिक्षा में कोमल कोठारी द्वारा एकत्रित लंगाह जाति के कलाकारों की रिकॉर्डिंग्स को आधार बनाकर बच्चों को राग, धुन, लोक गीत व वाद्ययंत्र को बजाने की तकनीक भी सिखाई जाती है। इस शिक्षा में प्राचीन लोक संगीत को कायम रखने के लिए ही रिकॉर्डिंग्स का सहारा लिया जाता है ताकि आज भी लंगाह जाति के लोग अपनी लोक संगीत की पुरातन कला को सजीव रख सके।[6]

3. रूपायन संस्थान

कोमल कोठारी ने 1953 में अपने पुराने दोस्त विजय दानदेथा, जो देश के अग्रणी कहानीकारों में गिने जाते हैं, उनके साथ मिलकर प्रेरणा नामक पत्रिका प्रकाशित करना शुरू किया। इस मासिक पत्रिका का ध्येय हर महीने में किसी लोक गीत की खोज करना और उस गीत को लिपिबद्ध करके प्रकाशित करना था। कोमल कोठारी राष्ट्रवादी विचारधारा के साथ संगीत में भी गहन रुचि रखते थे और उन्होंने देश भक्ति से ओतप्रोत राजस्थान के लोक गीत का भी संग्रह करना शुरू किया। 1960 में अपने मित्र विजय दानदेथा के साथ मिलकर उन्होंने रूपायण संस्थान की स्थापना की। इस संस्था ने स्वयं को राजस्थानी लोक संस्कृति के अनुसंधान और अध्ययन के लिए समर्पित कर दिया। रूपायन संस्थान द्वारा राजस्थान की लोक कथाओं, लोक कलाओं, एवं लोक संगीत का बड़े स्तर पर प्रलेखीकरण किया गया। रूपायन संस्थान ने राजस्थान में प्रचलित लोक कहावतों का संग्रह व प्रलेखन शुरू किया और लगभग 40 हजार लोक कहावतों को प्रकाशित करवाया। रूपायन संस्थान ने 15 अगस्त और 26 जनवरी को दिल्ली में आयोजित होने वाले समारोहों में भाग लेने के लिए राजस्थानी लोक कलाकारों को तैयार किया व उनकी कला को प्रदर्शित करने का अवसर दिलवाया। जब केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी ने विभिन्न क्षेत्रीय भारतीय कलाओं को उजागर करने के लिए लोक उत्सव की श्रृंखला की शुरूआत की तो रूपायन संस्थान ने लंगाह, मांगणियार और कालबेलिया जातियों के लोक गायकों और नर्तकों की कला को राष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुत करवाया। लोक संगीत, लोक वाद्ययंत्र, कठपुतली बनाना, हाथ की कढ़ाई-छपाई, मरुस्थल के लोगों की जीवन शैली, मौखिक परम्पराएँ एवं मौखिक साहित्य का शोध इस संस्थान के कार्य क्षेत्र के प्रमुख विषय थे।

रूपायन संस्थान की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार, श्इस समय रूपायन संस्थान के बोर्ड के सदस्यों के रूप में अनु मृदुल-प्रधान, डॉ. रश्मी पाटनी -उपप्रधान, कुलदीप कोठारी-सचिव, डॉ. उतरा कोठारी-सदस्य, मनीष सिसोदिया-सदस्य अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। रूपायन संस्थान का वर्षों से राजस्थान की प्रदर्शन कलाओं के साथ एक विशेष जुड़ाव रहा है, जो कोमल कोठारी द्वारा परिष्कृत सांस्कृतिक जुड़ाव के व्यापक ढांचे के भीतर विकसित हुआ है। रूपायन संस्थान द्वारा संग्रहित सामग्री का उपयोग दुनिया भर के प्रख्यात विद्वान, जैसे डॉ. जॉन डी. स्मिथ (एमेरिटस रीडर, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय), प्रो. सुसान वाडली (फोर्ड-मैक्सवेल दक्षिण एशियाई अध्ययन के प्रोफेसर और निदेशक, दक्षिण एशिया केंद्र, सिरैक्यूज विश्वविद्यालय), प्रो. एन ग्रिडजेन गोल्ड (थॉमस जे. वाटसन प्रोफेसर, धर्म और प्रोफेसर, नृविज्ञान, सिरैक्रस विश्वविद्यालय), विबेके होमा, प्रो. डेनियल न्यूमैन (भारतीय संगीत के मोहिंदर बराड़ सांभी अध्यक्ष और हर्ब अल्परट स्कूल ऑफ म्यूजिक, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के अंतरिम निदेशक) और डॉ. सुभा चौधरी (पुरालेख और नृवंशविज्ञान अनुसंधान केंद्र, गुड़गाँव) लंबे समय से रूपायन संस्थान से जुड़े रहें हैं और इन्होंने रूपायन संस्थान द्वारा संग्रहित राजस्थान की मूर्त व अमूर्त प्रदर्शनकलाओं का उपयोग अपने शोध कार्यों में भिन्न-भिन्न प्रकार से किया है। और रूपायन संस्थान विश्वभर से विद्वानों

और शोधकर्ताओं, संस्थानों और विभागों को राजस्थान और पश्चिमी दक्षिण एशिया के मौखिक इतिहास और लोक संस्कृति पर शोध करने के लिए आमंत्रित करता है।''[7]

4. अरना-झरना संग्रहालय

अरना-झरना मरुस्थल संग्रहालय, जोधपुर शहर से लगभग 10 किलोमीटर दूर मोकलावास गाँव में स्थित है। इस संग्रहालय का निर्माण कार्य भारत सरकार द्वारा पदमविभूषण पुरस्कार से अलंकृत कोमल कोठारी ने शुरू करवाया था। यह संग्रहालय बड़े नगरों में पल रहे बच्चों, बड़ों व भारत भ्रमण पर आने वाले विदेशी पर्यटकों को मरुस्थलीय जनजीवन, संस्कृति व राजस्थान राज्य की लोक संस्कृति के दर्शन करवाता है। इस संग्रहालय के मुख्य संग्रहों में राजस्थानी लोक वाद्य, कठपुतली प्रदर्शन, झाड़ुओं व मरुस्थलीय जीवन से जुड़ी बहुत सारी अन्य वस्तुएँ हैं।

अरना-झरना मरुस्थल संग्रहालय, जोधपुर में कुल 73 वाद्ययंत्र संग्रहित हैं जिनमें सुषिर वाद्य 17, अवनद्ध वाद्य 16, तत वाद्य 12, घन वाद्य 28 आदि संग्रहित हैं। संग्रहालय में लगभग 50 तरह की अलग-अलग वस्तुओं से निर्मित झाड़ुओं को भी प्रदर्शित किया गया है। तथा साथ ही कठपुतली प्रदर्शन भी किया जाता है। वर्ष 2008 में इस अरना-झरना संग्रहालय को यूनेस्को ने एथनोग्राफी संग्रहालय की श्रेणी में सूचीबद्ध किया। यह संग्रहालय दर्शकों के लिए सातों दिन सुबह 9 बजे से शाम 6 बजे तक खुला रहता है। इसके लिए विदेशी दर्शकों के लिए 150 रुपए व भारत के दर्शकों के लिए 50 रुपए टिकट रखी गई है।

चित्र संख्या 2

चित्र संख्या 3

उपरोक्त चित्र अरना-झरना संग्रहालय के वाद्ययंत्र संग्रहण भवन के हैं। जो शोध के दौरान शोधार्थी द्वारा लिए गए हैं।

5. प्रकाशन

कोमल कोठारी द्वारा संग्रहित व संरक्षित राजस्थानी लोक कलाओं को सी डी व पुस्तकों के माध्यम से प्रकाशित भी करवाया गया है। इस विषय के संबंध में कुलदीप कोठारी ने बताया, कि लोक संगीत से संबंधित रिकॉर्डिंग्स को एनालॉग से डिजिटल रूप में रूपांतरित किया जा रहा है और साथ ही इन रिकॉर्डिंग्स से संबंधित सभी प्रकार के तथ्यों का प्रलेखन कार्य भी नियमित रूप से जारी है। चूँकि लगभग रिकॉर्डिंग्स 20 हजार घंटों के करीब है तो इन सभी रिकॉर्डिंग को आमजन के समक्ष ला पाना अभी थोड़ा कठिन कार्य है किन्तु निकट भविष्य में ये सभी रिकॉर्डिंग्स दस्तावेजों सहित प्रकाशित की जाएगी। ताकि इन रिकॉर्डिंग्स से लोक संगीत जीवंत रह सके व शोध कार्यों को भी बल मिल सके।[8] अरना-झरना संग्रहालय की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार प्रकाशित सी डी व पुस्तकों की सूची निम्न प्रकार से है -

1.ऑडियो सी. डी.

➢Rajasthan: A Musical Journey

राजस्थानी लोक गीतों, मौखिक महाकाव्यों और वंशावली का एक विस्तृत चयन, रूपायन संस्थान के अभिलेखागार से लिया गया है।

➢Tunes of the Dunes: Haunting Folk Melodies: Instrumental (Vol-1)

इस एल्बम में राजस्थानी संगीत के दो प्रमुख वाद्ययंत्र हैं– साकार खान द्वारा बजाया गया कमायचा और मांगनियार लाखा खान द्वारा बजाया गया पायलदार सारंगी।

➢ Tunes of the Dunes: Haunting Folk Melodies: Instrumental (Vol- 2)

यह एल्बम राजस्थानी संगीत के तीन और लोकप्रिय वाद्ययंत्रों को प्रदर्शित करता है–ढोलक के साथ सतारा और मोरचंग।

➢Meera: Voices from the Deserts of India

इस सीडी में मेघवाल समुदाय के दो कुशल गायकों पद्मराम और महेशाराम द्वारा गाए गए मीरा की सबसे प्रतिष्ठित रचनाओं का संकलन है।

➢Meera: Voices from the Deserts of India

इस दूसरे खंड में संकलित बन्ना हैं, जिसका शाब्दिक अर्थ है दूल्हा। इस सीडी में प्रसिद्ध लंगोंह द्वारा प्रस्तुत विवाह गीत का संकलन है।

➢Desert Songs: Folk Musicians of Rajasthan Vol-1

इस संग्रह में मांगनियार संगीतकारों के प्रदर्शनों की सूची के प्रसिद्ध गीत और धुनें हैं।

➢Desert Songs 2: Folk Musicians of Rajasthan Vol-2

इस दूसरे खंड में प्रसिद्ध राजस्थानी संगीतकारों की गायन और वाद्य रचनाएँ हैं।

➢Rati & Jaga : Ritual Songs:Vols 1–2 & Vols 3–4

रूपायन संस्थान इस श्रृंखला में विजयलक्ष्मी ओझा और मंजू दवे द्वारा प्रस्तुत 50 रात्रि जागरण गीत प्रस्तुत करता है।

➢Rajrang: A Rhythmic Expression

यह एल्बम क्यों जागोई रे, लहरिया, घूमर, बजूदार बंगाड़ी, रूमल और चिरमी जैसे लोकप्रिय लोक गीतों का संकलन है।

➢**Karim Khan: Surnaiya Langa**

यह एल्बम हमें सुरनैया लंगा करीम खान द्वारा निर्देशित राजस्थानी माधुर्य संगीत की दुनिया में ले जाता है।

➢**Sakar Khan: Manganiar**

यह एल्बम मंगनियार साकार खान के कार्यों को समर्पित है।

➢**Bhungar Khan: Manganiar (Vols 1&2)**

यह एल्बम मांगनियार भुंगर खान के लोक गीतों का संकलन है।

2. किताबें

1. Rajasthan: An Oral History: Conversations with Komal Kothari.
2. Bards, Ballads and Boundaries: An Ethnographic Atlas of Music Traditions in West Rajasthan.

निष्कर्ष

इस प्रकार कोमल कोठारी ने अपना सम्पूर्ण जीवन को राजस्थानी लोक सांस्कृतिक सम्पदा चाहे वह मूर्त रूप में हो या अमूर्त रूप में, के संरक्षण व उत्थान में ही समर्पित कर दिया। इसलिए कोमल कोठारी का महत्व राजस्थानी लोक संगीत अतुलनीय है और आने वाले सेकंडों सालों तक इनका अनुसन्धान राजस्थानी लोक संगीत में अपनी महक बिखेरता रहेगा। और उनके द्वारा राजस्थानी मूर्त-अमूर्त प्रदर्शन कलाओं के संरक्षण के कार्यों को रूपायन संस्थान आज भी निरंतर गति से कर रही है। आज राजस्थान अपने लोक संगीत, लोक नृत्य, लोक परमपरा की वजह से पूरे विश्व में प्रसिद्ध है और इन लोक कलाओं की वजह से पर्यटन के केन्द्र के रूप में विकसित हुआ है। इन लोक कलाओं को विश्व स्तर पर लाने के सबसे अधिक श्रेय कोमल कोठारी को ही जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. साक्षात्कार, कुलदीप कोठारी, जगह-निवास स्थान जोधपुर, दिनांक 22 सितम्बर 2020, दोपहर 2 बजे।
2. https://www.patrika.com/jodhpur-news/91st-birth-anniversary-of-padmabhushan-komal-da-6729836/ Accessed on 12 January 2022 at 2 p.m.
3. गुप्ता, मोहनलाल, राजस्थान के प्रमुख संग्रहालय, शुभदा प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2019, पृष्ठ-201, 202.
4. https://bharatdiscovery.org/india Accessed on 6 January 2022 at 6 P.M.
5. साक्षात्कार, कुलदीप कोठारी, जगह-निवास स्थान जोधपुर, दिनांक 22 सितम्बर 2020, दोपहर 2 बजे।
6. Ibid
7. https://www.arnajharna.org/ Accessed on 12 January 2022 at 4 p.m.
8. साक्षात्कार, कुलदीप कोठारी, जगह-निवास स्थान जोधपुर, दिनांक 22 सितम्बर 2020, दोपहर 2 बजे।